कानपुर की यादगार टाईप-१ मीट

■ दीपिका नवरे

26 जनवरी की रात जब मैं अपनी सहेलियों के साथ कानपुर के लिये रवाना हुई, तो हमने कतई ही नहीं सोचा था कि यह एक अविस्मरणीय कार्यक्रम साबित होगा। कई बार ऐसा होता है कि मात्र दो–चार दिन आपकी जिंदगी में एक ऐसा बदलाव ला देते हैं कि आप नये मुकाम से सोचने के लिये मजबूर हो जाते हैं। मैं बात कर रही हूँ सी.एस.जे.एम. यूनिवर्सिटी, कानपुर की, जहाँ ''सोसायटी फार प्रिवेन्शन एण्ड अवेयरनेस आफ डायबिटीज'' (एस.पी.ए.डी.) ग्रुप ने टाइप वन डायबिटीक लोगों के लिये 27–28 जनवरी को कार्यक्रम रखा था।

मैं स्पैड टीम की बहुत ही दिल से तारीफ करूँगी कि हमारा कानपुर का प्रवास बहुत ही सुविधाजनक रहा। किसी भी 3–सितारा होटल से अच्छी ठहरने की मुफ्त व्यवस्था व हमारा रेल टिकिट भी मुफ्त।

हर वो इंसान जो कि टाइप वन है एक–न–एक बार ये जरूर सोचता है कि हे भगवान ये सब मेरे साथ ही क्यों, क्यों मुझे ही समोसे–कचौड़ी और जलेबी से दूर होने को कहा गया। पर मैंने वहाँ न जाने कितने और छोटे बच्चों को डायबिटीज़ के साथ इतने सुखरूप जीते देखा, वो बच्चे जिनके माँ–बाप को उन पर गर्व है, कि इतनी छोटी–सी आयु में वो इतनी समझदारी के साथ अपने जीवन का निर्वाह कर रहे हैं। ये वो बच्चे हैं, जो भीड़ में सबके साथ समान लगते हैं, जबकि इनमें एक कमी है। इतने छोटे–छोटे बच्चों से जब हमें इतना कुछ सीखने को मिलता है तो लगता है कि हम बहुत प्रगति कर रहे हैं। भारत का भविष्य बहुत ठोस हाथों में है।

डॉ. ऋषि शुक्ला ने सी.एस.जे.एम. यूनिवर्सिटी में एक ऐसा कार्यक्रम किया, जिसे भुला पाना लोगों के लिये नामुमकिन कार्य है। ऐसे उत्साहपूर्ण बच्चों को इकट्ठा करना, जिन्हें जिंदगी की किसी मुसीबत से डर नही लगता, और उनका साथ देने के लिये उनके डॉक्टर्स।

सही मानिये तो डॉक्टर्स की एक बहुत विशेष भूमिका रही है, इस काम के लिये वे ही तो हैं, जो हमें जिंदगी के साथ जीना सिखाते हैं। हाइपोग्लायसीमिया, हाइपरग्लायसीमिया को हार न बनाते हुये, किस तरह जीत में बदला जाये, ये हमने उन्हीं से सीखा है। डॉ. दीपक याग्निक, डॉ. संजय कालरा, डॉ. दीपक दलाल और न जाने कितने नामचीन डॉक्टर्स, जिनके विचारों से आप जाने कितनी नई चीजों के बारे में पता चलता है। शोधपत्र ऐसे कि दिल खुश हेा जाये। अब आप बोलेंगे कि शोधपत्र में ऐसा क्या कि इतनी खुशी हो।

इन डॉक्टर्स द्वारा प्रस्तुत किये गये शोधपत्र जिनमें पेनक्रियाज़ ट्रान्सप्लान्टेशन, इन्हेलर्स और बहुत जानकारी थी। पेनक्रियाज़ टांसप्लानटेशन, एक ऐसी पद्धति जो भारत में आ जाए तो, डायबिटीज का नाम ही गुम हो जायेगा। लेकिन शायद इस पद्धति को समय लगे। तब तक हमें इंतेजार करना होगा।

अगर आप अपने डॉक्टर से सम्पर्क कर उनकी बातों का ठीक से क्रियान्वयन करते हैं, तो सही मानिये, प्राब्लम कहीं भी नहीं रहेगी। ऐसी उपयोगी विषय वस्तु कितने ही डॉक्टर्स ने दी थी। डॉ. सुनील एम. जैन द्वारा दी गई इन्सुलिन पम्प की जानकारी भी बहुत अच्छी थी।

योग के बारे में आप सबने जरूर सुना होगा, परंतु चेतन स्वामी, जो फ्रांस से थे उनके योग के बारे में डायबिटिक लोगों के लिये विचार अत्यंत सराहनीय थे। उनके द्वारा दी गई ''सूर्यभेवी प्राणायाम'' के विषय में जानकारी बहुमूल्य थी।

इसी तरह दोस्तों रंगारंग कार्यक्रमों के समक्ष इस कान्फ्रेंस का समापन हुआ। गायन, नृत्य और पेन्टिंग प्रतियोगिता में बच्चों ने दिल खोलकर भाग लिया। मैंने तो अपने दोस्तों के साथ यह कार्यक्रम बहुत इन्जॉय किया और आशा करती हूँ कि यह लेख पढ़ने के बाद ऐसे अगले कार्यक्रम में बहुत सारे नये दोस्त बनाकर जाऊँगी। ● ● ●

आपकी दोस्त

– दीपिका नवरे